CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received 22.01.2023 Reviewed 28.02.2023 Accepted 18.03.2023

भारतीय ज्ञान परम्परा में षड्दर्शन में शिक्षण विधियां

* डॉ.विष्णु कुमार

मुख्य शब्द - षड्दर्शन, वेद,उपनिषद, शिक्षण विधियाँ, दर्शन, शिक्षा आदि.

सारांश

शिक्षा को दर्शन का सशक्त आधार प्राप्त होता है। षड्दर्शन में छः दर्शन आते है ये दर्शन वेद व उपनिषदों तथा पुराणों की विचारधाराओं का गूढ़ एवं सूक्ष्म रूप से विवेचना है। षड्दर्शन ज्ञानमीमांसा का दर्शन अधिक है। षड्दर्शनों में शिक्षा के स्वरूप का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है शिक्षा के स्वरूप को इनकी ज्ञानमीमांसा से जो संकेत मिलते है उनसे शिक्षा के स्वरूप का विवरण षड्दर्शन में दिया गया है। षड्दर्शन किस प्रकार शिक्षा को आधार प्रदान करता है। यहाँ पर यह जानना भी अति आवश्यक है कि शिक्षा के विभिन्न अंगों की षड्दर्शन किस प्रकार सहायता करता है। अतः शिक्षा के विभिन्न अंग जैसे – शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन , विद्यार्थी व गुरू सम्बन्ध आदि। अतः षड्दर्शन में शिक्षण विधियाँ कौन –कौन सी है उनका अध्ययन करने के उद्देश्य से यह आलेख लिखा गया है।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शनों में वेदों तथा उपनिषदों का प्रमुख स्थान रहा है। वेद ग्रन्थ भारतीय दर्शन के आदि स्त्रोत है। आदिकाल से ऋषियों की साक्षात अनुभूतियों को वेद–मंत्रों के रूप में गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा सचित रखा गया है। वेद मनुष्य के धार्मिक तथा दार्शनिक का प्रथम परिचय प्रस्तुत करते है। प्राचीनतम सामाजिक नियम ,सदाचार ,धर्म आदि के ज्ञान का आधार वेद है। उपनिषद् वेदों का निचोड़ है, जिसे वेदान्त भी कहतें है। उपनिषद् का अर्थ गुरू के समीप श्रद्वा सहित बैठकर उपदेश सुनना है। इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि वेद व उपनिषद्‌ों के दर्शन में गुरू–शिष्य परम्परा रही और शिक्षा की प्रकिया का सम्पादन हुआ। वेद व उपनिषद्‌ों ने दर्शन के साथ–साथ शिक्षा के स्वरूप का भी विशद् विवेचन किया है।

भारतीयों दर्शनों में दूसरा प्रमुख सम्प्रदाय षड्दर्शन माना जाता है, जो आस्तिक भी है। ईश्वरवादी दर्शन अधिक प्राचीन है इसका उद्गम भी वेदों से ही माना जाता है। ईश्वरवादियों की दूसरी विचाराधारा को महत्वपूर्ण सम्प्रदाय माना गया है इसके अन्तर्गत वेद व उपनिषदों के तत्वों के सम्बन्ध में गुढ़ रू में स्वतंत्र चिंतन किया गया है। उसे षड्दर्शन कहा गया है। इन षड्दर्शनों के अन्तर्गत तत्वों की प्रामाणिकता के लिए वेदों को ही आधार माना गया और चिंतन के तत्व – प्रकृति, जीव, जगत , ईश्वर , ब्रह्म तथा आत्मा आदि प्रमुख है। इन्ही के सम्बन्ध में पतंजलि, गौतम , कणाद, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य आदि ऋषियों ने अपने–अपने तरीके से गूढ़ चिंतन किया है। इस प्रकार षड्दर्शनों के अर्न्तगत तत्व –विचार तथा उसकी प्रमाणिकता को महत्व दिया गया है। षड्दर्शन में शिक्षा दर्शन का वेद और उपनिषद की भाँति विवेचन नहीं मिलता है। लेकिन षड्दर्शन में शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में

शिक्षा की प्रक्रिया, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम का स्वरूप, शिक्षण विधियाँ, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, विद्यालय प्रबन्धन इत्यादि पर व्यापक विवेचन षड्दर्शन में मिलता है।

षड्दर्शन का परिचय

भारतीय शिक्षा दर्शन की प्रमुख दो विचारधारायें है– प्रथम वह जो ईश्वर को मानते है, जिन्हें ईश्वरवादी तथा आस्तिक कहते है। द्वितीय विचारधारा जो ईश्वर को नहीं मानते है। ईश्वरवादी दर्शन अधिक प्राचीन दर्शन है जिसका उद्गम वेदों से हुआ है। वेदों पर आधारित दो प्रमुख विचारधाराएं है जिन्हें कर्मकाण्ड या मीमांसा दर्शन तथा ज्ञानकाण्ड या वेदान्त दर्शन कहते है। ईश्वरवादी दूसरी विचारधारा जो महत्वपूर्ण दर्शन का सम्प्रदाय है और स्वतंत्र चिंतन पर आधारित है उसे षड्–दर्शन कहते है। षड्–दर्शन सम्प्रदाय के अन्तर्गत छः दर्शन 1 सांख्य दर्शन 2 योग दर्शन 3 न्याय दर्शन 4 वैशेषिक दर्शन 5 मीमांसा दर्शन 6 अद्वैत दर्शन, (विशिष्ट–अद्वैत दर्शन) को षड्–दर्शन सम्मिलित किया है।

क.सं.	दर्शन	प्रणेता	मुख्य ग्रंथ	मुख्य सिद्वांत
1	सांख्य दर्शन	कपिल मुनि	ईश्वर कृष्ण की सांख्य–कारिका	द्वैतवाद, निरीश्वरवाद
2	योग दर्शन	पतंजलि	योग–सूत्र	साधना पक्ष पर बल, अष्टाग योग
3	न्याय दर्शन	महर्षि गौतम	न्याय सूत्र	प्रमुखतः ज्ञान मीमांसात्मक
4	वैशेषिक दर्शन	कणाद मुनि	वैशेषिक सूत्र	प्रमुखतः तत्व मीमांसात्मक
5	मीमांसा दर्शन	जैमिनि	जैमिनि सूत्र	प्रमुखतः कर्मकाण्डीय,धार्मिक विधि–विधानों पर बल
6	अद्वैत दर्शन	शंकारचार्य	ब्रह्मसूत्र	ग्रन्थों पर बल, ब्रह्म,ईश्वर तथा जगत,अंतिम सत्ता ब्रह्म है।
	विशिष्ट– अद्वैत दर्शन	रामानुजाचार्य	भाष्य	ईश्वर, चित् तथा अचित् प्रधान

षड्दर्शन शिक्षा के उद्देश्य

षड्दर्शन के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–

1 शारीरिक विकास करना इसमें कर्मइन्द्रियों तथा ज्ञानइन्द्रियों का विकास करना।

2 मानसिक,भावात्मक, नैतिक,बौद्विक ,आध्यात्मिक विकास करना।

3 योग साधना के लिए नैतिक आचरण का विकास करना।

4 यथार्थ ज्ञान पर बल देना।

5 मोक्ष प्राप्त करना।

6 मन, वचन तथा कर्म के संयम का प्रशिक्षण।

7 सद् व्यवहारिक जीवन की क्षमता का विकास करना।

8 वैदिक विधियों का अनुसरण करके वेद की प्रमाण–सिद्वि को महत्व देना।

षड्दर्शन में शिक्षण विधियाँ

षड्दर्शन सम्प्रदाय के दर्शनों ने तत्वमीमांसा में विभिन्न तत्वों को महत्व दिया है। इतना ही नहीं अपितु उन्होंने तत्वों की संख्या को भी निर्धारित किया है। सांख्य दर्शन ने दो मूल तत्व प्रकृति तथा पुरूष और कुल तत्वों की संख्या पच्चीस दी है और प्रत्येंक तत्व का विवेचन भी अपने तरीकें से किया है। इसी प्रकार अन्य दर्शनों ने भी स्वतंत्र रून से तत्व विचार पर चिंतन किया है और उनके गूढ़ मीमांसा की है। इस तत्वों तथा मीमांसा को व्यावहारिक रूप देने के लिए शिक्षा और धर्म ही दो व्यवहारिक प्रक्रियायें है। इनके अन्तर्गत विभिन्न शिक्षण विधियों तथा प्रविधियों की सहायता से इन्हें व्यावहारिक रूप दिया जा सकता है। जबकि इन दर्शनों में शिक्षण विधियों के सम्बन्ध में कोई निश्चित संकेत नहीं दिये। परन्तु सभी दर्शनों ने तत्व के प्रमाण विचार के लिए वेदों को आधार माना है। इससे स्पष्ट होता है कि वेदों के अनुसार शिक्षण विधियों को सभी में प्रयुक्त किया जा सकता है। षड्दर्शन में शिक्षा की विभिन्न शिक्षण विधियों की विवेचना की गई है मुख्य रूप से षड्दर्शन में प्रचलित शिक्षण विधियां निम्न है:–

1. श्रवण शिक्षण विधि
2. मनन–चिंतन शिक्षण विधि
3. अनुभूति शिक्षण विधि (निदिध्यासन)
4. उपदेशात्मक शिक्षण विधि
5. व्याख्यान शिक्षण विधि
6. कथा शिक्षण विधि
7. प्रश्नोत्तर शिक्षण विधि
8. प्रहेलिकात्मक शिक्षण विधि
9. सूत्र शिक्षण विधि
10. संवाद शिक्षण विधि
11. समन्वय शिक्षण विधि
12. प्रत्यक्षीकरण शिक्षण विधि

1 श्रवण शिक्षण विधि :– षड्दर्शन श्रवण अर्थात मौखिक सुनने की प्रकियरा द्वारा छात्र का विभिन्न सिद्वातों को गुरू श्रवण करवाते थे इससे छात्रों में मनन और चिन्तन सुनने के बाद पैदा होता है। सूत्रो के माध्यम से साधक को विभिन्न दार्शनिक अपने–अपने सिद्वातों का श्रवण कराते है इससे छात्र की स्मरण शक्ति का विकास होता है। तथा छात्र में धैर्य के साथ सुनने की प्रवृत्ति को बढ़ता है। वेदान्त दर्शन में श्रवण को उपनिषदों के सिद्वांतों के अनुरूप कार्स की प्रवृत्ति के अनुरूप स्वीकार किया गया । यह साधना के अन्तरंग साधनों का पहला सोपान था। प्राचीनकाल में लेखनकला विकसित नही थी इसीलिए श्रवण परम्परा के द्वारा शिक्षण की प्रकिया की जाती थी। उल्लेखनीय है कि श्रवण से ही श्रुति शब्द निष्पन्न होता है।

2 मनन–चिंतन शिक्षण विधिः–मनन से अभिप्राय है विषय का गहराई के साथ चिन्तन । क्योंकि जिसका श्रवण किया गया उसी का तर्को द्वारा चिन्तन करना कहलाता है। साधक इन तत्वों के साथ एकाकर होता है इसीलिए षड्दर्शनों में सभी ऋषियों ने पृथक–पृथक मनन के विषय में उल्लेख किया है जहां उनका प्रतिपाद्य विषय विवेचित होता है। वेदान्त का पहला सूत्र अधातोब्रह्माजिज्ञासा, ब्रह्म की जिज्ञासा से करते हुए विषय के साथ मनन करने की प्रवृत्ति को छात्रों से उद्बुद्व करने पर बल दिया है। यह कहना अधिक समीचीन होगा कि भारतीय मेधा मनन विधि को अधिक महत्व इसलिए देती है क्योंकि चिन्तन्ञ ही दार्शनिक समस्याओं को उद्बुद्व करता है सुने हुए पर मनन करने से ही विभिन्न विषयों जो सम्प्रेषण से प्राप्त हुए है वे सभी इसी भाव में उद्बृद्व होती है। गुरू कह छत्र–छाया में स्वाध्याय तथा मनन द्वारा छात्र शब्द ,मंत्र तथा छनदों के सारगर्भित अर्थ और रहस्य को समझते थे। अतः मनन वह जो शब्द ,अर्थ और संबंध आत्मा में एकत्र हुए है उनका एकान्त में स्वस्थचित होकर विचार करना कि कौन अर्थ किस शब्द के साथ संबंध अर्थाम मेल रखता और इनके मेल में किस प्रयोजन की सिद्वि और उलटे होने में क्या–क्या होती है।

3 अनुभूति शिक्षण विधि (निदिध्यासन) :– निदिध्यासन से तात्पर्य है कि जो शब्द ,अर्थ और संबंध सुने विचारे है वे ठीक–ठीक है या नहीं? इस बात की विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना। इस सोपरन मे अत्यन्त मेधावी छात्र ही चिन्तप –मनन द्वारा विश्लेषित अर्थो की अनुभूति करते थे। छात्र तब तक प्रश्न करता जाता है जब तक उसे आनन्द की पूरी अनुभूति नहीं हो जाती । श्रवण और मनन के अतिरिक्त निदिध्यासन पर विशेष बल देना पड़ता था। सत्य ज्ञानमनंत ब्रह्म की अनुभूति के लिए श्रवण मनन और निदिध्यासन तीनों आवश्यक है। साथ–साथ तप और साधन भी महत्वपूर्ण माने जाते थे। विजातीय शरीरादि प्रत्ययो से रहित होकर ब्रह्म के सजातीय प्रत्ययों को प्रवाहित करना निदिध्यासन है।

4 उपदेशात्मक शिक्षण विधिः– षड्दर्शनों में आदेश एवं उपदेश के रूप में ऋषि चिन्तन प्रस्तुत करता है। उपनिषदकाल में प्रशिक्षण की प्रमुख विधि उपदेशात्मक थी जिसमें सम्प्रेषणीय को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था। उपदेशात्मक शिक्षण विधि में गुरू –शिष्य के मध्य ज्ञान वार्ता के रूप में प्रयुक्त करते थे। जब छात्र गुरू के समीप बैठता है तो गुरू के उपदेश तथा विचार–विमर्श से छात्रों की संकाओं का निवारण तथा ज्ञान का स्पष्टीकरण करता है। उपदेशों के अर्न्तगत तात्विक विवेचन के साथ–साथ उपदेशों की स्थिति सभी दर्शनों में व्याख्यापित की गई हैं । न्याय दशर्न के अन्तर्गत प्रमाण मीमांसा का विवेचन अपवग्र की दशाएं इसी प्रकार उपदेशात्मक है। सांख्य दर्शन में इसी प्रकार पुरूष और प्रकृति का उपदेश देते हुए तत्वज्ञान के उपदेश के लिए उपद्रेष्टा गुरू की आवश्यकता मानी है। उपदेश के अनन्तर उसकी बार–बार आवृत्ति करना तत्वज्ञान का साधन है। उपदेश में विचार –विमर्श, शंका–निवारण , अवबोधन, आदि होता है। इससे ज्ञान का स्पष्टीकरण होता है।

5 व्याख्यान शिक्षण विधिः––प्राचीन शिक्षा पद्वति में व्याख्यान विधि का प्रयोग सर्वत्र स्वीकार किया गया है। गूढ़ एवं सूक्ष्म विषयों को स्पष्ट करने के लिए आचार्य व्याख्यान विधि का आश्रय लेते थे। षड्दर्शनों में व्याख्यान में चिन्तन मनन की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया है। सांख्य, योग दर्शन में भी व्याख्यान विधि को शिक्षण की प्रमुख विधि माना गया है।

6 कथा शिक्षण विधि :–षड्दर्शनों में कथा और प्रवचन के द्वारा सिद्वान्तों का निर्वचन किया गया है। वेदों में प्रथमतः हमें इसका परिचय मिलता है। जिसमें देव , मनुष्य इत्यादि की कथाएं वर्णित है उसमें कथा के उज्ज्वल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष दोनों हो सकते हैं उज्ज्वल पक्ष में वह आत्मप्रशस्ति, अपने गौरवगीत अपने महत्वपूर्ण कार्य, आत्मविजयोल्लास,अपनी उमंग,अपनी महत्वकांक्षा आदि का वर्णन करता है। कृष्ण पक्ष में वह अपनी हीन दशा पर परिवेदन करता है। वेदों में इस शैली का प्रचुर प्रयोग मिलता है। षड्दर्शनों में सांख्य सूत्र(4/11) में पिगंला नाम की महिला की कथा से शिक्षा दी गई है। न्यायदर्शन (2/50) शब्द और अनुमान प्रमाण के अनुसार कथा द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्पष्टतः न्याय वैशेषिक ने कथाओं के माध्यम से विषय का प्रतिपादन किया । आधुनिक काल में शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत कथा शिक्षण विधि को स्वीकार किया गया है।

7 प्रश्नोत्तर शिक्षण विधिः– शिक्षा में प्रश्नोत्तर विधि विशेष महत्व रखती है। ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, महाभारत आदि उत्तरकालीन साहित्य में यह शैली पर्याप्त पल्लवित हुई है। प्रश्नोत्तर शैली के प्रथम दर्शन हम वेदों में पाते है। चारों ही वेदों में न्यूनाधिक प्रश्नोत्तर मिलते है। प्राचीन काल से शिष्य गुरू से जो प्रश्न करते थे तथा गुरू उनका जो उत्तर देते थें उन्हीं से कई शास्त्र या शास्त्रों विशेष प्रकरण बन गये है। कभी–कभी ये प्रश्नोत्तर शिष्यों–गुरूओं में जिज्ञासा शान्ति के निमित किये गये प्रश्नोत्तरों से विपरीत विद्वानों में एक दूसरे को विजित करने की इच्छा से परस्पर परीक्षा लेने के लिए होते थें। उपनिषदों में भी प्रश्नोत्तर पाये जाते थे । महाभारत का ज्ञान प्रश्नोत्तर से ही प्राप्त होता हैं पतंजलि के महाभाष्य में भी प्रश्नोत्तर शैली का अपनायी है। षड्दर्शनों में प्रश्नोत्तर ,प्रश्नानुप्रश्न शैली का प्रयोग सर्वाधिक रीति से किया गया है। प्रश्नानुप्रश्न विधि का प्रयोग सांख्य दर्शन में सर्वत्र मिलता है। आधुनिक काल राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा वर्तमान संदर्भो में प्रश्नानुप्रश्न शैली को स्वीकार किया है। शिक्षा में गूढ़ता और विषयवस्तु के साथ–साथ सम्प्रेषण के निर्हितार्थ तभी सम्भव है जब शिष्य की जिज्ञासों प्रश्नों का समाधान हो सके।

8 प्रहेलिकात्मक शिक्षण विधिः–किसी तथ्य को गुप्त या रहस्यमय रूप में प्रकट करना वेदों को बहुत रूचिकर है। ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा है कि देवता परोक्षप्रिय होते है। प्रहेलिका भी परोक्षप्रधान होती है। अतः प्रहेलिकात्मक शैली ले वेद में विशेष स्थान पाया है। प्रहेलिका का अर्थ पहेलिया से जो शिक्षण एक विधि है। प्राचीन काल से ही प्रहेलिका का शिक्षा देने में गुरूओं ने इस विधि का प्रयोग व्यापक रूप से किया है। इस विधि के द्वारा छात्रों में मनन और तार्किक विचारों की शक्ति को बढ़ाता है। संस्कृत के

काव्यशास्त्रियों ने प्रहेलिका पर पर्याप्त विचार किया है। तथा समय–समय पर संस्कृत के कचि प्रहेलिकाएं लिखते रहे है। दण्डी ने प्रहेलिका का उपयोग बताते हुए कहा है कि क्रीड़ा–गोष्ठियों में मनोरंजन ,जनाकीर्ण स्थान में परस्पर गुप्त भाषण के लिए यह उपादेय होती है। उसने समागमता ,वंचिता, व्युत्क्रान्ता, प्रमुषिता, समानरूपा आदि प्रहेलिका के सोलह भेदों का भी सोदाहरण निरूपण किया है। षड्दर्शनों में भी हमे प्रहेलिका के माध्यम से सभी दर्शनों में ज्ञान को उद्बुद्व करने का प्रयास प्रहेलिका के द्वारा किया गया है। आज की खोज प्रशिक्षण मॉडल उसी प्रहेलिका का विकसित रूप है।

9 सूत्र शिक्षण विधि :–वृहत ज्ञान को प्रायः कुछ सूत्रों के रूप में सरलता से ग्रहण कर लिया जाता है। जब विस्तार से स्मरण कर पाना कठिन हो जाता है तो ज्ञान को स्मरण करने के लिए कुछ सूत्रों का प्रयोग करना सूत्र विधि के अंतर्गत आता है। षड्दर्शनों में सर्वत्र सूत्र परम्परा दृष्टिगोचर हुई है। सूत्र रूप में ही दर्शनकारों ने उपनिषदों की पद्वति का अनुशीलन किया जिसके आदर्श पर परवर्ती दर्शन–पद्वतियों के सूत्र साहित्य की सृष्टि हुई । इस पद्वति की विशेषता यह है कि यह समस्त विचार तत्व को एक छोट भावपूर्ण वाक्य में संगठित कर देती है। सूत्र विधि का वेद, ऋषियों, धर्म इनके वचन या कथन को प्रमाण मानने तथा पालन करने का संकेत है। इससे स्मरण करने तथा धारण करने सरलतस होती है। महर्षि कपिल ने सांख्य दर्शन में सूत्र विधि का ही विवेचन किया है। उन्होंने ईश्वरसिद्वे(1/57) जैसे विवेचन के आधार पर छात्र को संक्षेप में अध्ययन कराया जाता है। यह सूत्र विधि है जिसे ग्रहण करने में सरलता होती है तथा इसे तुरन्त विवेचित किया जा सकता है। मीमांया दर्शन ने भी सूत्रों में ही विवेचना प्रस्तुत की है। अतः सूत्र के आधार पर ज्ञान का विस्तार करना । इन सूत्रों के विस्तार ही आज टीकाओं के रूप में उपलब्ध है।

10 संवाद शिक्षण विधि :– उपनिषदों में संवाद विधि के माध्यम से भी विषय को अधिगम कराने का प्रयत्न परिलक्षित होता है। वेदों में संवाद आते है, जिनमें दो या अधिक पात्रों के संवाद द्वारा किन्हीं रहस्यों को प्रकट किया गया है। संवादों द्वारा शिक्षा शिक्षण की एक रोचक शैली है। वेद के ये संवाद भाषा ,भव, नाटकीय शैली आदि सभी दृष्टियों को देखकर अनेक विद्वान संस्कृत नाटक का उद्भव वेदों से मानते है। षड्दर्शनों में भी संवाद शैली को स्वीकार किया गया है। इसमें संवाद के माध्यम से निरन्तर शंका प्रकट की जाती है। तदोपरान्त उसका उत्तर दिया जाता है यह विधि सबसे अधिक प्रचलित विधि है। न्याय दर्शन में किसी कार्य को दोहराया–तिहराया जाना,बार–बार करना , अभ्यास कहा जाता है। ऐसे अभ्यास का विषय स्थिर देखा गया है। इसी प्रकार वैशेषिक दर्शनकार भी शिष्य की जिज्ञासा को संवाद के रूप में स्वीकार करता है।

11 समन्वय शिक्षण विधि :–दार्शनिक विवेचन की समन्वय विधि की प्रकृति के विपरीत है। इस विधि का उद्देश्य भिन्न–भिन्न बिखरे हुए सिद्वातों को संगठित करके मूल सिद्वान्त का प्रतिपादन करना है, जैसा कि छान्दोग्योपनिषद में अश्वपति कैकेय ने सृष्टि–विधान–शास्त्र के तत्व ज्ञानह छः पृथक–पृथक सिद्वातों के समन्वय द्वारा किया। इस विधि के अन्तर्गत विभिन्न विचारों और सिद्वान्तों का पूर्वा पर समन्वय किया जाता है। छात्र को इसका ज्ञान कराया जाना ही अभिप्रेत है। शिक्षा का महत्व ही यह है कि सर्वत्र समन्वय की अपेक्षा से ही व्यक्तित्व का विकास किया जाये। वेदानत दर्शन में तत्व समन्वय का सूत्र इसी तत्व का बोधक है। जगत् का कर्त्ता और ऋग्वेदादि शास्त्र के प्रादुर्भाव का कारण एकमात्र ब्रह्म है, यह बात जगत् और ऋग्वेदादि शास्त्र के समन्वय से समझी जा सकती है। इन दोनो का समन्वय पारस्परिक सामंजस्य इस बात को स्पष्ट है कि इनका रचयिता एक है।

12 प्रत्यक्षीकरण शिक्षण विधि :– वर्तमान युग की प्रयोगात्मक विधि की भाँति प्रत्यक्षीकरण की विधि का आश्रय उपनिषदों में लिया गया है। इस विधि के द्वारा प्रयोगात्मक विधि द्वारा प्रत्यक्षानुभव कराके ज्ञान को अधिक प्रमाणिकता प्रदान की जाती थी। प्रदार्थ –ज्ञान पर आधरित वैशेषिक दर्शन को मानने वाले प्रत्यक्ष विधि के प्रयोग का समर्थन करते है। सांख्य दर्शन में प्रयुक्त दूसरी विधि है प्रत्यक्ष विधि जिससे शिक्षा या ज्ञान देना सरल होता है। इस विधि के अन्तर्गत छात्र विषय का प्रत्यक्ष अनुभव करता है, यही अनुभवजन्य ज्ञान है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः उपर्युक्त शिक्षण विधियों में व्यावहारिक साधनों का परिचय देना मानव जीवन के सर्वविध कल्याण के लिए आवश्यक है षड्दर्शनों में आत्मप्रकाश के लिए गुरू मार्ग से बढ़कर अन्य मार्ग नहीं है। जिस साधक की अपने गुरू में ईश्वर के समान परम भक्ति है, उसके हृदय में रहस्यमय कर्म स्वतः ही प्रकाशित होते है। षड्दर्शनों की शिक्षा पद्वति का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि यह एक सर्वागपूर्ण लोककल्याणकारी शिक्षा पद्वति थी। इसमें ज्ञान–विज्ञान ,आध्यात्म सभी का समावेश था यह जीवन की

आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ थी। षड्दर्शनों का शिक्षा में आज भी महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रकार षड्दर्शन के शिक्षा सम्बंधी विचारो को अन्य दर्शनों ने अपनाया और आज भी विद्यालयों तथा जन–कल्याण के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

संदर्भ

1 शर्मा,आर.एन.(1996) – *भारतीय दर्शन के मूल तत्व,* मेरठःकेदार नाथ तथा रामनाथ प्रकाशन ।

2 तिवारी, केदार नाथ (2002) – *तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा,* दिल्लीःमोती लाल बनारसीदास पब्लिशर्स।

3 शर्मा,आर.एन.(1996)– *शिक्षा दर्शन,* नई दिल्लीः एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड वितरक।

4 पाण्डेय , आर.एस.(2004) – *धर्म दर्शन एवं शिक्षा* ,मेरठः आर.लाल बुक डिपो।

5 पाण्डेय , आर.एस.(2000) – *पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन,*मेरठः आर.लाल बुक डिपो।

6 कुमार,कृष्ण – *प्राचीन भारत की शिक्षा पद्वति ।*

Corresponding Author
*** डॉ.विष्णु कुमार**
सह–आचार्य (शिक्षा)
सैन्ट्रल एकेडमी टी.टी. कॉलेज ,अजमेर (राज.)
Email- vishnukr.12@gmail.com, Mobile-9887077005